॥ अनुक्रमणिका ॥

विषय	पृष्ठ सं.
॥ अध्याय – षष्टम् ॥	
1. शिवभक्त महावाक्य	104
2. मनुष्य की 3 समस्याये – मन, तन और धन	106
3. सुलेमान सूक्ति संग्रह : धर्म – अधर्म	108
4. भगवान योनि	121
5. जल तत्त्व	121
6. अग्नि तत्त्व	123
7. निःस्वार्थ भाव	124
8. धरती पर ब्रह्मास्त्र-स्त्री	125
9. मन ही मनु है	126
10. राजनीति	127
11. शिव महिमा	129
12. समस्त मंत्रों का राजा – ओउम्	129

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ शिवभक्त महावाक्य ॥

1. ॥ अहं ब्रह्मास्मि ॥
   वह परमेश्वर मैं हूँ।
2. ॥ योऽसौ सोऽहं हंसः सोऽहमस्ति ॥
   जो वह है, वह मैं हूँ। मैं वह हूँ और वह मैं हूँ।
3. ॥ तत्त्वमसि ॥
   वह परमेश्वर आप है।
4. ॥ प्रज्ञानं ब्रह्म ॥
   ब्रह्म ज्ञानस्वरूप है।
5. ॥ प्राणोऽस्मि ॥
   मैं परमेश्वर प्राण हूँ।
6. ॥ प्रज्ञानात्मा ॥
   मैं परमेश्वर आत्मा का ज्ञान हूँ।
7. ॥ यदवेह तदमुत्र तदन्विह ॥
   जो परमेश्वर यहाँ है, वही सात आसमान के ऊपर भी है ,और जो वहाँ है, वही इस धरती पर भी है।
8. ॥ अपां च प्राणोऽहमस्मि तेजसश्च प्राणोऽहमस्मि ॥
   मैं परमेश्वर जल का प्राण हूँ ,मैं तेज का प्राण हूँ।
9. ॥ तत्त्वस्य प्राणोऽहमस्मि पृथिव्याः प्राणोऽहस्मि ॥
   मैं परमेश्वर तत्त्व का प्राण हूँ ,मैं पृथ्वी का प्राण हूँ।
10. ॥ वायोश्च प्राणोऽहमस्मि आकाशस्य प्राणोऽहस्मि ॥
    मै परमेश्वर वायु का प्राण हूँ और मैं आकाश का प्राण हूँ।
11. ॥ त्रिगुणस्य प्राणोऽहस्मि ॥
    मैं परमेश्वर सत्त्वगुण,रजोगुण और तमगुण का प्राण हूँ।
12. ॥ अयमात्मा परमात्मा ॥
    यह आत्मा परमात्मा है।
13. ॥ अन्यदेव तद्विदितादथो अविदितादधि ॥
    वह परमेश्वर ज्ञात वस्तुओं और अज्ञात वस्तुओं से भी ऊपर है।
14. ॥ ईशा वास्यमिदं सर्वम् ॥

॥ शिवलिंग ॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

जो दिखाई देता है, उसमें भी और जो दिखायी नहीं देता है ,उसमें भी ,सब जगह ,सब कुछ में परमेश्वर ही स्थित है।

15.॥ एष त आत्मान्तर्याम्यमृतः ॥

तुम्हारी आत्मा ही अमृत है।

16. ॥ स यश्चायं पुरूषो यश्चासावादित्ये स ॥

वह जो इस मनुष्य में है, और जो वह सूर्य में है , वह दोनों एक ही है।

17.॥ वेदशास्त्रगुरूणां तु स्वयमानन्दलक्षणम् ॥

वेदों, शास्त्रों और गुरू के वचनों से स्वंय ही ह्रदय में परमेश्वर का अनुभव होने लगता है।

18.॥ सर्वभूतस्थितं ब्रह्म तदेवाहं न संशयः ॥

जो सम्पूर्ण प्राणियों में स्थित हैं, वही परमेश्वर मैं हूँ। इसमें संशय नहीं है।

19.॥ सर्वोऽहं सर्वात्मको संसारी यद्भूतं यच्च भव्यं यद्वतमानं सर्वात्मकत्वादद्वितीयोऽहम् ॥

मैं सब कुछ हूँ। मैं सब रूपों में हूँ। संसार के सभी प्राणियों की आत्मा मैं हूँ। जो भूत, वर्तमान, भविष्य है, वह मेरा ही स्वरूप है। मै अद्वितीय परमेश्वर हूँ।

20.॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म ॥

सब कुछ निश्चय ही परमेश्वर है।

21.॥ सर्वोऽहं विमुक्तोऽहम् ॥

सभी रूपों में मैं परमेश्वर हूँ और मैं परमेश्वर मुक्त हूँ।

22.॥ ओंकारम् ॥

॥ ओंकारम ॥

मैं स्वयं का आकार हूँ।

23.॥ परमेश्वरः सर्वभूतानां ह्रदेशे तिष्ठति ॥

परमेश्वर सभी मनुष्यों,प्राणियों के ह्रदय में रहता हैं।

24. ॥ लिगेंश्वरं एवं परमेश्वरं ॥

शिवलिंग ही परमेश्वर है।

25.॥ ला इलाहाइल्लअल्लाह ॥

कण - कण में परमेश्वर है।

26. ॥ अहं ब्रह्मास्मि च त्वम् अपि ब्रह्मास्मि ॥

मैं ब्रह्म हूँ और तुम भी ब्रह्म हो।

॥ मनुष्य की 3 समस्याये - मन, तन और धन ॥

किसी भी मनुष्य की तन, मन और धन से ही संबंधित समस्यायें होती है। इसके अतिरिक्त और किसी भी चीज से संबंधित समस्यायें नहीं है।

''मन'' चंचल है। व्यक्ति संसार में है। संसार की अच्छी - बुरी बातें आँखों और कान के माध्यम से प्रवेश कर मन को विचलित करती है। मन को अशान्त करती है। और अगर मन अशान्त हो गया तो यहाँ से समस्या प्रारम्भ हो जाती है।

सबसे पहले मन को देखे, मन को शान्त रखने की कोशिश करे , भावनाओं में न बहे, जज्बातों को नियंत्रित करे,तुरंत फैसले न करे, थोड़ा समय ले लें, प्रभु की भक्ति करे,ध्यान एक जगह पर स्थिर करे, क्रोध न करे। आँखे बंदकर अपने - आप को समय दे तो यकीनन मन शान्त होगा। मन शान्त हो गया तो तन और धन की समस्या स्वंय ही समाप्त हो जाएगी। तो सबसे पहले मन को शान्त रखना आवश्यक है।

''तन'' अगर स्वस्थ है तो ठीक अन्यथा तन स्वस्थ नहीं है तो कई छोटी - बड़ी बिमारियाँ शरीर को घेरे रहती है। व्यक्ति अस्पताल के चक्कर लगाता-लगाता दम तोड़ देता है। एक बार शरीर में बिमारी लग गयी, एक छोटा सा फोड़ा - फुंसी, ज्वर भी हो जाता है तो समस्या शुरू हो जाती है।

''तन'' अर्थात् शरीर। शरीर तो एक मशीन है, मशीन कार्य करता रहता है तो खराब कम ही होता है और अगर मशीन बंद हो जाय तो जंग लगना शुरू। ठीक ऐसे ही मनुष्य का शरीर भी है। चलता - फिरता रहता है तो स्वस्थ अन्यथा जंग अर्थात् बिमारी लगनी शुरू।

शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम करे, जीम जाये, सुबह उठकर छत पर टहले, फलों का सेवन करे, दूध - दही ले। मांस, मदिरा, मैथुन से बचे। योग करे, गीत सुने, मुस्कराते रहे तो बिमारी पास नही आएगी।

॥ योग मुद्रा में भगवान शिव ॥

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ करे योग, रहे निरोग ॥

और अन्त में आते है, धन पर। धन की आवश्यकता प्रत्येक मनुष्य को है। धन के न रहने पर मनुष्य को दुःख होता है और रहने पर भी दुःख की कमी नहीं है। अगर मन शान्त है, शरीर स्वस्थ है तो धन की समस्या भी खत्म। धन बंधन है। फिर भी बिना धन के इस संसार में रहना मनुष्य प्राणी के लिए असम्भव सा है।

''धन'' तो परमेश्वर की कृपा से मिलता है। अपने को शिक्षित करे, समय के साथ - साथ चले। हमेशा कुछ-न-कुछ सीखते रहे, काबिल बने, हुनर सीखें। याद रखे, हुनर ही रोटी देता है। मेहनत करते रहे, निराश न होवै। समय बदलता है। कोई एक दिन प्रत्येक व्यक्ति का आता है। मौके की तलाश में रहे। शिवलिंग पर चावल चढ़ाये क्योंकि जिस स्थान के शिवलिंग का मस्तक शून्य रहता है, वहाँ गरीबी,भूखमरी,रोग आदि आते है। और जहाँ शिवलिंग के मस्तक पर चावल, फूल, चंदन, रोली, बेलपत्र होते है, वहाँ के निवासी सुख, शांति और समृद्धि से सम्पन्न होते है। जैसे- तीर्थ स्थान परमेश्वर शिव की कृपा नगरी काशी (वाराणसी) और यहाँ के निवासी शिवभक्त। यहाँ पर गली - गली में शिवलिंग है और शिवलिंग का मस्तक यहाँ सूना नहीं रहता और गरीबी, भूखमरी भी दूर रहती है।

माँ लक्ष्मी भी बेल के वृक्ष से बने शिवलिंग की ही पूजा करती है। इसीलिए शिवलिंग के ऊपर ''ओउम्'' बोलकर बेलपत्र चढ़ाने से मईया लक्ष्मी भी प्रसन्न होती है।

इस प्रकार मन शान्त है तो शांति, शरीर बिमारी से मुक्त है ,स्वस्थ है तो सुख और धन है तो समृद्धि निवास करती है। यही सुख - शांति - समृद्धि एक मनुष्य के लिए आवश्यक है। जो हमारे देश 'भारत' के राष्ट्रीय ध्वज -'तिरंगा' में सम्मिलित है ,दर्शाता है - सफेद, केशरिया और हरे रंग के माध्यम से।

किश्मत ना बदले ना सही लेकिन कर्म किश्मत लिखता भी है। कर्म करे, निःस्वार्थ भाव से।

'कर्मन्ये अधिकारे मा फलेषु कदाचन'

॥ कर्मयोगी भगवान कृष्ण ॥

अर्थात् कर्म करना तेरा अधिकार है, फल पाना तेरा अधिकार नहीं है। और तो और तेरे कर्म का फल तो तुझे ही मिलेगा, किसी दूसरे को हरगिज नहीं।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

॥ सुलेमान सूक्ति संग्रह : धर्म – अधर्म ॥

1. पुत्र ! अपने पिता की शिक्षा पर ध्यान दो,
अपनी माता की सीख अस्वीकार मत करो।
2. पुत्र ! यदि पापी लोग तुमको लुभाना चाहे,
तो उनकी बात मत मानो।
3. अज्ञानियों की अवज्ञा उन्हीं को मारती है,
मूर्खो का अविवेक उनका ही सर्वनाश करती है।
4. प्रभु धर्मियों को सफलता दिलाता है। वह धर्ममार्ग पर पहरा देता है और अपने भक्तों का पथ सुरक्षित रखता है।
5. जिसने अपनी युवावस्था के साथी का परित्याग किया
और अपने ईश्वर का विधान भूला दिया।
उसका घर मृत्यु की ओर, उसका पथ
अधोलोक की ओर ले जाता है।
6. प्यार और ईमानदारी को अपने से अलग नहीं करो।
उन्हें अपने गले मे बाँध लो,
अपने हृदय के पटल पर अंकित कर लो।
इस प्रकार तुम ईश्वर और मनुष्यों की दृष्टि में
कृपा और सुयश के पात्र बनोगे।
7. तुम सारे हृदय से प्रभु का भरोसा करो,
अपनी बुद्धि पर निर्भर मत रहो।
8. तुम अपने सब कार्यो में प्रभु का ध्यान रखो।
वह तुम्हारा मार्ग प्रशस्त कर देगा।
9. अपने को बुद्धिमान मत समझो।
प्रभु पर श्रद्धा रखो और बुराई से दूर रहो।
10. अपनी सम्पत्ति से प्रभु का सम्मान करो,
उसे कृषि उपज का दसवाँ भाग अर्पित करो।
इससे तुम्हारे गोदाम अनाज से भरे रहेंगे।
11. प्रभु के अनुशासन की अपेक्षा मत करो
और उसकी फटकार का बुरा मत मानो।
क्योंकि जिस प्रकार पिता अपने प्रिय पुत्र को दण्ड देता है,
उसी प्रकार प्रभु जिसे प्यार करता है, उसे दण्ड देता है।
12. पुत्र ! समझदारी और विवेक सुरक्षित रखो,
उन्हें अपनी आँखों से ओझल न करो,
जिससे वे तुमको जीवन प्रदान करे।
13. यदि तुम दे सकते हो, तो अपने पड़ोसी से यह न कहो,
'चले जाओ ! फिर आना ! मैं तुम्हें कल दूँगा।'

॥ SHIVBHAKTI MAHAPURAN ॥

14. दुष्ट के घर पर प्रभु का अभिशाप पड़ता है,
किन्तु वह धर्मी के घर को आर्शीवाद देता है।
15. प्रभु घमण्डियों को नीचा दिखाता और
दीनों, गरीबों को अपना कृपापात्र बना लेता है।
16. किसी भी कीमत पर सद्‌बुद्धि प्राप्त करो।
इसे सँजोये रखो और वह तुम्हें महान बना देगी,
इससे लिपटे रहो और यह तुम्हें सम्मान दिलायेगी।

॥ नबी रसूल ॥

17. दुष्टों के मार्ग में प्रवेश मत करो,
कुकर्मियों के पथ पर मत चलो।
उससे दूर रहो, उस पर पैर मत रखो,
उससे कतरा कर आगे बढ़ो।
18. दुष्ट पाप किये बिना सोने नहीं जाते।
यदि उन्होंने किसी को पथभ्रष्ट नहीं किया,
तो उन्हें नींद नहीं आती।
वे अधर्म की रोटी खाते है और हिंसा की मदिरा पीते है।
19. तुम बड़ी सावधानी से अपने हृदय की रक्षा करो,
क्योंकि जीवन का स्रोत उससे फूटा करता है।
20. अपने मुख को असत्य न बोलने दो,
अपने होठों से हर प्रकार का कपट दूर रखो।
21. तुम्हारी आँखें सीधी, सामने की ओर देखा करे।
तुम्हारी दृष्टि ठीक आगे की ओर टिकी रहे।
जिस पथ पर चलते हो, उसे ध्यान से देखो,
तुम्हारे सभी मार्ग निरापद हो।
22. व्यभिचारी के होठों से मधु चूता है
और उसकी वाणी तेल से भी चिकनी है।
किन्तु अंत में वह चिरायते - जैसी कड़वी
और दुधारी तलवार-जैसी तेज होती है।
उसके पैर मृत्यु की ओर बढ़ते है
और उसके कदम अधोलोक की ओर।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

23. व्यभिचारी से दूर रहो,
उसके घर की देहली पर पैर मत रखो।
कहीं ऐसा न हो कि तुम अपनी मर्यादा खो बैठो,
और अपना जीवन उस निर्दयी को अर्पित कर दो।
24. अपने ही कुण्ड का पानी पियो, अपने की कुएँ के बहते स्रोत से।
क्यों तुम्हारे जलस्रोत घर के बाहर,
तुम्हारी जलधाराएँ सड़कों पर बहे ?
इन पर तुम्हारा ही अधिकार है।
इनमें तुम्हारे साथ किसी पराये की साझेदारी नहीं।
तुम्हारे जलस्रोत को आर्शीवाद प्राप्त हो।
तुम अपनी पत्नी, उस सुन्दर हिरनी, उस रमणीय मृगी
से सुखी रहो, उसका प्रेमस्पर्श तुमको तृप्ति प्रदान करता रहे,
उसका प्रेम तुमको मोहित करता रहे।
25. यदि तुम अपनी प्रतिज्ञा के जाल में फँसे हो ,
यदि तुम अपने ही शब्दों से बँध गये हो,
तो तुम मुक्त होने के लिए यह करो,
तुम अपनी आँखों में नींद न आने दो,
अपनी पलकों को झपकी न लेने दो,
तुम हिरन की तरह शिकारी के जाल से पक्षी की
तरह बहेलिये के फन्दे से अपने को छुड़ाओ।
26. आलसी ! तुम चींटी के पास जाओ।
उसके आचरण पर विचार करो और प्रज्ञ बनो।
उसका न तो कोई स्वामी है,
न कोई निरीक्षक और न कोई शासक।
वह समय पर अपने रसद का प्रबन्ध करती
और फसल के समय अपना भोजन संचित करती है।
27. आलसी ! तुम कब तक पड़े रहोगे,
तुम अपनी नींद से कब जागोगे ?
थोड़ी देर तक सोना, थोंड़ी देर झपकी लेना और
हाथ - पर - हाथ रखकर थोड़ी देर आराम करना -
ऐसा होने पर गरीबी तुम पर डाकू की तरह टूटेगी,
अभाव तुम पर बलशाली की तरह आक्रमण करेगा।
28. वह व्यक्ति निकम्मा और दुष्ट है,
जो असत्य बोलता रहता है ,
जो आँख मारता, पैर घसीट कर चलता है
और उँगलियों से इशारा करता है,

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

अपने हृदय में कपटपूर्ण योजनायें बनाता
और लड़ाई लगाता है।
इससे विपत्ति उस पर अचानक टूट पड़ेगी।
वह पलक मारते ही नष्ट हो जायेगा
और उसका उपचार सम्भव नहीं होगा।

29. प्रभु छः बातों से बैर रखता और सात बातों से घृणा करता है :
घमण्ड - भरी आँखें, झूठ बोलने वाले जीभ,
निर्दोष रक्त बहाने वाले हाथ,
कपटपूर्ण योजनाएँ बनाने वाला हृदय,
बुराई की ओर बढ़ने वाले पैर,
असत्य बोलने वाला झूठा साक्षी और
भाइयों में झगड़ा लगाने वाला व्यक्ति।

30. लोग उस चोर का तिरस्कार नहीं करते,
जो अपनी भूख मिटाने के लिए चोरी करता है।

31. परस्त्रीगमन करने वाला नासमझ है,
क्योंकि वह ऐसा करने पर अपना ही सर्वनाश करता है।
वह पीटा जायेगा, वह बदनाम होगा,
और उसका कलंक कभी नहीं मिटेगा।

32. समझदारी को अपनी कुटुम्बिनी समझो।
वे तुम को परस्त्री के जाल से, उसके मोहक वचनों से बचाएगी।

33. तुम, जो भोले हो, समझदार बनो,
तुम, जो मूर्ख हो, बुद्धिमान बनो।

34. प्रभु पर श्रद्धा बुराई से बैर करती है।

35. बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनन्द देता
और मूर्ख पुत्र से माता को दुःख होता है।

36. अन्याय की सम्पत्ति से लाभ नहीं,
किन्तु धार्मिकता मृत्यु से रक्षा करती है।

37. प्रभु धार्मिक मनुष्य को कभी भूखा नहीं रहने देता,
किन्तु पापियों की लालसा की पूर्ति में बाधा डालता है।

38. आलसी हाथ गरीब और परिश्रमी हाथ अमीर बनाते है।

39. जो धर्म के मार्ग पर चलता है, वह सुरक्षित है,
किन्तु जो अधर्म के मार्ग पर चलता है, वह दण्डित होगा।

40. बैर झगड़े को बढ़ावा देता है,
किन्तु प्रेम सभी पाप ढक देता है।

41. बुद्धिमान अपने ज्ञान का भण्डार भरता रहता है।
मूर्ख का बकवाद उसके विनाश का कारण बनता है।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

42. धनी की सम्पत्ति उसके लिए किलाबन्द नगर है।
कंगाल की गरीबी उसकी विपत्ति का कारण है।
43. धर्मी की कमाई जीवन की ओर,
किन्तु अधर्मी की आमदनी पाप की ओर ले जाती है।
44. जो अनुशासन मे रहता है, वह जीवन की ओर आगे बढ़ता है।
किन्तु जो चेतावनी की उपेक्षा करता है, वह पथभ्रष्ट होता है।
45. जो बहुत अधिक बोलता है, वह पाप से नहीं बचता।
किन्तु जो अपनी जीभ पर नियंत्रण रखता है, वह बुद्धिमान है।
46. धर्मी की जीभ शुद्ध चाँदी है,
किन्तु पापियों के हृदय का कोई मूल्य नहीं।
47. प्रभु के आर्शीवाद से ही कोई धनवान बनता है।
इसकी तुलना में हमारा परिश्रम नगण्य है।
48. दुष्ट जिस बात से डरता है, वह उसके सिर पड़ती है,
किन्तु धर्मियों की मनोकामनाएँ पूरी हो जाती है।
49. बवण्डर, आँधी - तूफान पापी को उड़ा ले जाता है,
किन्तु धर्मी सदा पैर जमाये रखता है।
50. प्रभु पर श्रद्धा आयु बढ़ाती है।
किन्तु दुष्टों के वर्ष घटाये जाते है।
51. धर्मी कभी विचलित नहीं होगा,
किन्तु विधर्मी देश में निवास नहीं करेंगे।
52. धर्मी के होंठ प्रिय बातें करते है,
किन्तु दुष्ट के मुख से कुटिल बातें निकलती है।
53. धर्मियों की ईमानदारी उनका पथप्रदर्शन करती है,
किन्तु अधर्मियों का कपट उनका विनाश करता है।
54. सम्पत्ति कोप के दिन किसी काम की नहीं,
किन्तु धार्मिकता मृत्यु से रक्षा करेगी।
55. निर्दोष की धार्मिकता उसका मार्ग प्रशस्त करती है,
किन्तु दुष्ट की दुष्टता उसका विनाश करती है।
56. मरने पर दुष्ट की आशा मर जाती है,
और अपनी सम्पत्ति पर उसका भरोसा भी मरता है।
57. धर्मी संकट से मुक्त है, वह विधर्मी के सिर पर पड़ता है।
58. धर्मियों की उन्नति पर नगर आनन्द मनाता है,
किन्तु दुष्टों के विनाश पर लोग जयकार करते है।
59. धर्मियों के आर्शीवाद से नगर की उन्नति होती है,
किन्तु दुष्टों के दुर्वचनों से वह नष्ट हो जाता है।
60. गप्पी गुप्त बातें प्रकट करता है,

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

किन्तु विश्वासी उन्हें छिपाये रखता है।

61. धार्मिकता जीवन की ओर ले जाता है,
किन्तु बुराई करने वाला मृत्यु की ओर बढ़ता है।

62. प्रभु को कपटी हृदयों से घृणा है,
किन्तु वह निर्दोषों पर प्रसन्न है।

63. धर्मियों के भाग्य में कल्याण बदा है,
किन्तु अधर्मियों के भाग्य में प्रभु का क्रोध लिखा है।

64. लोग अनाज के जमाखोर को कोसते है
और अनाज बेचने वाले को आर्शीवाद देते है।

65. जिसे अपनी सम्पत्ति का भरोसा है, उसका पतन होगा,
किन्तु धर्मी नये पौधों जैसा लहलहायेगा।

66. यदि धर्मी को पृथ्वी पर अपने कर्मो का फल मिलता है,
तो दुष्ट और पापी को क्यों नहीं ?

67. सच्चरित्र पत्नी अपने पति का मुकुट है,
किन्तु ब्यभिचारिणी अपने पति की हड्डियों का क्षय है।

68. दुष्टों का विनाश हो जाता है और वे फिर दिखाई नहीं देते,
किन्तु धर्मी का घराना बना रहता है।

69. मनुष्य जिस तरह अपने हाथ से परिश्रम का फल पाता,
उसी तरह उसे अपने शब्दों के फल से अच्छी चीजें प्राप्त होती है।

70. मूर्ख अपना क्रोध तुरन्त प्रकट करता है,
किन्तु समझदार व्यक्ति अपमान पी जाता है।

71. विश्वनीय गवाह प्रामाणिक साक्ष्य देता है,
किन्तु झूठा गवाह कपटपूर्ण बातें कहता है।

72. धर्मियों के सिर पर विपत्ति नहीं पड़ेगी,
किन्तु दुष्ट कष्टों से घिरे रहते है।

73. प्रभु को झूठ बोलने वालो से घृणा है,
किन्तु वह सत्य बोलने वालों पर प्रसन्न है।

74. मन की चिन्ता मनुष्य को निराश करती है,
किन्तु एक सहानुभूतिपूर्ण शब्द उसे आनन्दित करता है।

75. समझदार पुत्र अपने पिता की शिक्षा सुनता है,
किन्तु उपहास करने वाला डाँट - डपट की चिंता नहीं करता।

76. आलसी की आशा व्यर्थ है,
किन्तु परिश्रमी की इच्छा पूरी होगी।

77. कोई अपने को धनी बताता, जब कि उसके पास कुछ नहीं।
कोई अपने को दरिद्र बताता, जबकि उसके पास अपार सम्पत्ति है।

78. धर्मियों की ज्योति देदीप्यमान है,

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

किन्तु दुष्टों का दिया बुझ जाएगा।
79. अचानक पायी हुई सम्पत्ति नहीं टिकटी,
किन्तु थोड़ा - थोड़ा करके इकट्ठा धन बढ़ता रहेगा।
80. आशा की पूर्ति में विलम्ब मन को निरूत्साह कर देता है,
किन्तु अभिलाषा पूरी होने पर मन में नवजीवन का संचार होता है।
81. जो शिक्षा की उपेक्षा करता, उसे पछताना पड़ेगा,
किन्तु जो आज्ञा का पालन करता उसे पुरस्कार मिलेगा।
82. सद्बुद्धि मनुष्य को लोगों का कृपापात्र बनाती है,
किन्तु बेईमान का आचरण उसके पतन का कारण बनता है।
83. विपत्ति पापियों का पीछा करती है,
किन्तु सुख - शान्ति धर्मियों का पुरस्कार है।
84. धर्मी भरपेट भोजन करता है,

॥ धर्मी का भोजन ॥

किन्तु पापी भूखा रहता है।
85. बुद्धिमान नारी अपने लिए घर बनाती है।
किन्तु मूर्ख स्त्री अपने हाथों से अपना घर गिराती है।
86. सन्मार्ग पर चलने वाला प्रभु पर श्रद्धा रखता है,
किन्तु कुमार्ग पर चलने वाला प्रभु का तिरस्कार करता है।
87. हृदय अपनी ही पीड़ा का मर्म जानता है,
उसके आनन्द का कोई पराया भागी नहीं होता।
88. दुष्टों का घर ढा दिया जाएगा,
किन्तु धर्मियों का तम्बू समृद्ध होगा।
89. कुछ लोग अपना आचरण ठीक समझते है,
किन्तु वह अन्त में उन्हें मृत्यु की ओर ले जाता है।
90. हँसते हुए मनुष्य का हृदय उदास हो सकता है
और आनन्द का परिवर्तन दुःख में सम्भव है।
91. दरिद्र अपने पड़ोसी द्वारा तुच्छ समझा जाता है,

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

किन्तु धनवान के बहुत मित्र होते है।

92. जो अपने पड़ोसी को तुच्छ समझता, वह पापी है,
किन्तु जो दरिद्रों पर दया करता, वह सुखी है।

93. प्रजा की बड़ी संख्या राजा की शोभा है।
प्रजा की कमी शासक का विनाश है।

94. मन की शांति शरीर को स्वास्थ्य प्रदान करती,
किन्तु ईर्ष्या हड्डियों का क्षय है।

95. जो दुर्बल पर अत्याचार करता, वह उसके सृष्टिकर्ता की निन्दा करता है,
किन्तु जो दरिद्र पर दया करता है, वह परमेश्वर का सम्मान करता है।

96. सदाचार देश को महान बनाता है,
किन्तु पाप राष्ट्रों का कलंक है।

97. प्रभु की आँखें सब कुछ देखती है।
वह भले - बुरे दोनों पर दृष्टि दौड़ाता है।

98. धर्मी के घर में समृद्धि है,
किन्तु दुष्ट की आय झंझट पैदा करती है।

99. महाप्रभु स्वर्ग और नर्क का रहस्य जानता है,
तो मनुष्यों के हृदयों की बात ही क्या है ?

100. आनन्दित - हृदय मुख को आलोकित करता है,
किन्तु दुःखी हृदय से मन उदास होता है।

101. दरिद्र के सभी दिन दुःखमय है
किन्तु प्रसन्न हृदय के लिए प्रतिदिन त्योहार है।

102. अशान्ति पैदा करने वाली अपार सम्पत्ति की अपेक्षा,
प्रभु पर श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति का थोड़ा सा सामान अच्छा है।

103. बैर के घर के मोटे बछड़े की अपेक्षा,
प्यार के घर का सागपात अच्छा है।

104. आलसी का पथ काँटों से भरा,
किन्तु धर्मी का मार्ग प्रशस्त है।

105. मुँहतोड़ जबाब देने में मनुष्य को आनन्द आता है,
यथोचित शब्द कितने अच्छे है।

106. प्रभु घमण्डियों का घर गिराता है।
किन्तु विधवा के खेत के सीमा - पत्थर की रक्षा करता है।

107. पाप की कमाई एकत्र करने वाला अपना घर संकट में डालता है,
किन्तु घूस से घृणा करने वाला जीवित रहेगा।

108. प्रभु दुष्टों से दूर रहता है,
किन्तु वह धर्मियों की प्रार्थना सुनता है।

109. मनुष्य योजनाएँ बनाता है ,

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

उनकी सफलता महाप्रभु पर निर्भर है।

110. अपने सभी कार्य प्रभु को अर्पित करो
और तुम्हारी योजनाएँ सफल होगी।

111. यदि प्रभु किसी के आचरण से प्रसन्न है,
तो वह उसके शत्रुओं से भी उसका मेल कराता है।

112. मनुष्य मन में अपना मार्ग निश्चित करता है,
लेकिन महाप्रभु उसके कदमों को मजबूत बनाता है।

113. ज्ञानी का हृदय उसे अच्छा वक्ता बनाता है,
और उसकी वाणी को मनवाने की शक्ति प्रदान करता है।

114. मधुर वाणी मधुमक्खी का छत्ता है।
वह मन को आनन्द और शरीर को स्वास्थ्य प्रदान करती है।

115. मजदूर की भूख उससे काम कराती है,
उसका खाली पेट उसे विवश करता है।

116. निकम्मा व्यक्ति बुराई की योजना बनाता है।
उसके मुख से दाहक अग्नि निकलती है।

117. सिर के पके बाल सुन्दर मुकुट है।
वे धर्म मार्ग पर चलने वालों में पाये जाते है।

118. धैर्यवान व्यक्ति वीर योद्धा से श्रेष्ठ है,
और आत्मसंयमी नगर - विजेता से बढ़कर है।

119. निर्णय के लिए चिट्ठियाँ पात्र में डाली जाती है,
किन्तु परिणाम प्रभु के हाथ में है।

120. अनबन के घर में दावतों की अपेक्षा,
शांति के साथ सूखी रोटी अच्छी है।

121. जो कंगाल का उपहास करता है,
वह उसके सृष्टिकर्ता का अपमान करता है।

122. जो दूसरों की विपत्ति पर प्रसन्न होता है,
उसे निश्चय ही दण्ड मिलेगा।

123. नाती - पोते बूढ़ो के मुकुट है,
और पिता पुत्रों की शोभा है।

124. रिश्वत देने वाला समझता है, कि घूस जादू का पत्थर है।
वह जहाँ भी जाता है, सफलता प्राप्त करता है।

125. जो भलाई का बदला बुराई से चुकाता है,
उसके घर से विपत्ति कभी नहीं हटेगी।

126. झगड़े का प्रारम्भ बाँध की दरार - जैसा है।
प्रारम्भ होने से पहले झगड़ा बन्द करो।

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

॥ प्रेमपूर्वक हाथ मिलाते दो भाई ॥

127. जो पापी को निर्दोष और धर्मी को दोषी ठहराता है,
दोनों से महाप्रभु को घृणा है।
128. दोस्त सब समय प्रेम निबाहता है।
भाई विपत्ति के दिन के लिए जन्म लेता है।
129. जो अपना फाटक ऊँचा बनवाता है,
वह विपत्ति बुलवाता है।
130. आनन्दमय हृदय अच्छी दवा है।
उदास मन हड्डियाँ सुखाता है।
131. दुष्ट न्याय को भ्रष्ट करने के लिए,
छिपकर घूस स्वीकार करता है।
132. मूर्ख के होंठ झगड़ा पैदा करते है ,
उसका मुँह मारपीट को निमंत्रण देता है।
133. जो काम में ढिलाई करता है , वह काम बिगाड़ने वाले का भाई है।
134. मनुष्य का पेट उसके शब्दों के फल से भरता है,
वह अपने होंठों की उपज से अपना निर्वाह करता है।
135. जीवन और मृत्यु, दोनों मनुष्य की जीभ के अधीन है ,
उसका सदुपयोग करो और तुम्हें उसका फल प्राप्त होगा।
136. दरिद्र गिड़- गिड़ाकर बोलता है ,
किन्तु धनी रूखाई से उत्तर देता है।
137. जिसके बहुत साथी है, उसका सत्यानाश हो जाता है।
किन्तु अकेला दोस्त भाई से भी अधिक निष्ठावान और प्यारा है।
138. जब दरिद्र के सभी भाई उसकी उपेक्षा करते है,
तो उसके मित्र उससे कन्नी क्यों नहीं काटेंगे ?
किन्तु वे उसके पास नही रूकते।
139. झगड़ालू पत्नी निरन्तर चूने वाली नल -जैसी है।
140. घर और सम्पत्ति पूर्वजों की विरासत है,
किन्तु समझदार पत्नी परमेश्वर का वरदान है।
141. आलस्य मनुष्य को गहरी नीद में सुलाता है।
आलसी का पेट भूखा रहता है।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

142. जो दरिद्रों पर दया करता है, वह प्रभु को उधार देता है।
महाप्रभु उसे उसके उपकार का बदला चुकायेगा।
143. प्रभु पर श्रद्धा जीवन की ओर ले जाती है।
इससे मनुष्य निश्चिन्त होकर सोचता है और विपत्ति उसके पास नहीं फटकती।
144. आलसी थाली में हाथ डालता तो है,
किन्तु वह उसे उठाकर मुँह तक नहीं ले जाता।
145. जो अपने पिता पर हाथ उठाता और अपनी माता को घर से निकालता है,
वह अपने माता - पिता की लज्जता और कलंक है।
146. झूठा गवाह न्याय की हँसी उड़ाता है।
147. उपहास करने वालों को दण्ड और मूर्खों की पीठ पर लाठी!
148. मदिरा उपद्रव मचाती है।
जो उनके कारण भटकता है, वह बुद्धिमान नहीं।
149. विवाद से अलग रहना मनुष्य को शोभा देता है। सभी मूर्ख झगड़ालू होते है।
150. कौन मनुष्य यह कह सकता है: "मैनें अपना हृदय शुद्ध किया, मैं अपने पाप से मुक्त हो गया हूँ?"
151. सुनने के कान और देखने की आँखें महाप्रभु ने दोनों को बनाया है।
152. नींद को प्यार मत करो, नहीं तो दरिद्र बनोगे।
आँखें खुली रखो और तुमको रोटी की कमी नहीं होगी।
153. सोना और मोती बहुत मिलते है,
किन्तु ज्ञानपूर्ण बातें सर्वोत्तम है।
154. झूठ की रोटी भले ही किसी को मीठी लगे,
किन्तु बाद में उसका मुँह कंकड़ से भरा होता है।
155. यह नहीं कहो। "मैं इस बुराई का बदला चुकाऊँगा"।
प्रभु का भरोसा करो और वह तुम्हारी रक्षा करेगा।
156. मनुष्य के कदम प्रभु पर निर्भर रहते है,
वह यह नहीं जानता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।
157. मार खाने से आत्मा शुद्ध होता है।
158. जो परिश्रम करता है, उसकी योजनाएँ सफल हो जाती है। जो उतावली करता है, वह दरिद्र हो जाता है।
159. गुप्त रूप से दिया हुआ उपकार क्रोध को शान्त करता है।
कपड़ों में छिपी हुई घूस क्रोधाग्नि बुझा देती है।
160. जो समझदारी के मार्ग से भटकता है,
वह प्रेतों की सभा में पहुँच जाता है।
161. भोग - विलास का प्रेमी दरिद्र बनेगा,
मदिरा और दावत का शौकीन कभी धनी नहीं बन सकता।
162. अमीर और गरीब में यही समानता है कि

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

प्रभु ने दोनों की सृष्टि की है।

॥ परमेश्वर को धन्यवाद देता एक नन्हा प्राणी ॥

163. धनी दरिद्रों पर शासन करता है
और ऋणदाता ऋणी को अपना दास बनाता है।

164. जो धनी को दान देता है, वह दरिद्र बनता है।

165. धनी बनने के लिए परिश्रम मत करो,
यह विचार अपने मन से निकाल दो।

166. तुम धन पर आँख लगाते हो, तो वह लुप्त हो जाता है,
क्योंकि उसके पंख निकल आते है। और वह गरूड़ की तरह आकाश की ओर उड़ जाता है।

167. अनाथों के घर पर पैर मत रखो।

168. युवक को दण्ड देने से मत हिचको, यदि तुम उसे छड़ी लगाओगे, तो वह मरेगा नहीं,
बल्कि उसे छड़ी लगाने से तुम नरक से उसकी रक्षा करोगे।

169. यदि तुम विपत्ति के समय निराश होते हो,
तो तुम में शक्ति की बहुत कमी है।

170. दुष्ट ! धर्मी के घर के पास घात मत लगाओ,
उसके निवासस्थान पर छापा मत मारो।
क्योंकि धर्मी भले ही सात बार गिरे, वह फिर उठेगा,
जबकि दुष्ट विपत्ति में नष्ट हो जाते है।

171. जो दोषी से यह कहता है, ''तुम निर्दोष हो'',
जनता उसे श्राप देगी और राष्ट्र उसकी निन्दा करेगा।

172. उत्तर की हवा वर्षा लाती है।

173. जिस प्रकार फुदकती गौरैया कहीं नहीं रूकती,
उसी प्रकार अकारण अभिशाप किसी को नहीं लगता।

174. आने वाले कल की डींग मत मारो,
क्योंकि तुम नहीं जानते कि एक ही दिन में क्या होगा।

175. लोहे से लोहा पजाया जाता है,

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

मनुष्य से मनुष्य का सुधार होता है।

176. दरिद्रों का शोषण करने वाला राजा फसल नष्ट करने वाली मूसलाधार वर्षा जैसा है।

177. दरिद्र जनता पर शासन करने वाला राजा दहाड़ते सिंह के भूखे रीछ – जैसा है।

178. नासमझ राजा अपनी प्रजा को लूटा करता है।

179. जो राजा अधिक कर उगाहता है,
वह देश का विनाश करता है।

180. जब दुष्ट शासन करते है तो अपराध बढ़ते है,
किन्तु धर्मी उनका पतन देखेंगे।

181. कौन स्वर्ग जाकर फिर उतरा ?
किसने हवा को अपनी मुट्ठी में बंद किया ?
किसने कपड़े में पानी को बाँधा ?
उसका और उसके पुत्र का क्या नाम है ?
यदि तुम जानते हो, तो मुझे बताओ।

182. हे महाप्रभु ! मुझे न तो गरीबी दे और न अमीरी –
मुझे आवश्यक भोजन मात्र प्रदान कर।
कहीं ऐसा न हो कि मैं धनी बनकर तुझे अस्वीकार करते हुए कहूँ – ''प्रभु कौन है ?''
अथवा दरिद्र बनकर चोरी करने लगूँ और तेरा नाम कलंकित करूँ।

183. तीन बातों से पृथ्वी काँपती है , चार को वह सह नहीं सकती।
राजा बनने वाला दास,
भरपेट भोजन करने वाला मूर्ख,
विवाह करने वाली कुत्सित स्त्री
और अपनी मालकिन का स्थान लेने वाली नौकरानी।

184. अपना पौरूष स्त्रियों पर व्यय मत करो।

185. राजा, मदिरा पीने के बाद कानून भूल जाता है और
दलितों के अधिकार छीन लेता है।

186. प्रभु पर श्रद्धा रखने वाली नारी ही प्रशंसनीय है।

॥ प्रभु पर श्रद्धा रखने वाली नारी ॥

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

॥ भगवान योनि ॥

परमेश्वर की कृपा से ही एक मनुष्य को भगवान योनि की प्राप्ति होती है। भगवान भी कर्म करते रहते है। भगवान को भी यह निर्देष दिया जाता है कि आप भक्त के कल्याण (शिवभक्त) के लिए तत्पर रहेंगे। किसी की भी कामना -पूर्ति बहुत सोच समझकर करेंगे। यह नहीं कि कोई बच्चा खिलौने की जगह पिस्तौल मांगे तो आप पिस्तौल दे। आप बच्चे के हित के लिए खिलौने ही दे। आप मंदिर में बैठकर छप्पन भोग न करे बल्कि भक्त के लिए दो रोटी का इन्तेजाम करे। दुष्टों को दण्ड दे। जो आपको दिल से याद कर रहा हो ,उसकी अवश्य सुने। सत्य के साथ चले। अन्याय का साथ हरगिज न दे।

भगवान न्यायी है। जो व्यक्ति दीन हो गए है, वे उन्हें नष्ट नहीं करते बल्कि उनका उद्धार करते है। प्रभु समस्त पृथ्वी पर दृष्टि दौड़ाते है , जिससे वह उन लोगों की सहायता करे , जो सारे हृदय से उस पर भरोसा रखते है।

॥ परमेश्वर को शीश झुकाता नन्हा प्राणी ॥

दैवीय गुणों से युक्त मनुष्य ही भगवान योनि में प्रवेश करता है। प्रेम , क्षमा, दया, शिवभक्ति, कल्याण का भाव ,सत्यप्रतिज्ञ ,न्यायी , शांत ,मोह-माया से दूरी ,परमेश्वर में एकाग्र भाव ,गरीबों- असहायों के हित के लिए कार्य करना ,व्रत ,तप, ध्यान ये सभी, मनुष्य अपने हृदय में धीरे- धीरे धारण करते रहे तो भगवान योनि मनुष्य योनि से दूर नहीं है।

॥ जल तत्त्व ॥

आत्मा को जल भींगा नहीं सकता। पृथ्वी पर 3 भाग जल है तो मनुष्य शरीर में भी 3भाग जल है। मनुष्य जल से बना हुआ है। परमेश्वर कहते है , ''अपां च प्राणोऽहमस्मि ''मैं परमेश्वर जल का प्राण हूँ। जल में से प्राण अर्थात् ऑक्सीजन निकल जाये तो भला कौन प्राणी जीवित रह सकता है ? शरीर में जल की कमी हो जाए तो ,जीवित रहने के लिए डॉक्टर को जल चढ़ाने की जरूरत पड़ ही जाती है।

II SHIVBHAKTI PURAN II

जल की बूँदों से कई धाराएँ निकलती है ,वह धाराएँ नदियाँ ,तालाब सागर आदि में संचित रहती है। है तो वह जल की एक- एक बूँद का समूह ही ,सो जल तत्त्व है। जल में परमेश्वर है। जल है तो प्राणी का जीवन है।

॥ जल ग्रहण करता हुआ प्राणी ॥

सोचो ,अगर एक दिन मनुष्य को जल न मिले तो क्या मनुष्य जीवित रह सकता है ? नहीं , तो जल ही जीवन है। जीवन परमेश्वर है। जल से ही पशु -पक्षी ,पेड़ -पौधे ,जीव -जन्तु ,मनुष्य सभी प्राणी तृप्त होते है। पितर भी जल से ही तृप्त होते है। स्वर्ग के सभी देव, परमेश्वर भी जल से ही तृप्त होते है। यहाँ तक कि शिवलिंग के ऊपर मात्र जल चढ़ाने से ही शिव जी प्रसन्न हो जाते है।

जल से ही बादल बनते है। वही बादल वर्षा करता है तो सभी जीव बहुत प्रसन्न होते है। जल में भी बहुत से जीवों का निवास है। नारायण भी जल में ही निवास करते है। जल पृथ्वी पर भी है और स्वर्ग में भी है क्योंकि जलरूपी माँ गंगा जो लोगों को पवित्र करती है, वह भी तो स्वर्ग से आयी है। स्वर्ग में गंगा का नाम है मंदाकिनी और पाताल में भोगवती है।

परमेश्वर ने जब सृष्टि बनायी तो उसी समय सात महासागर भी बनाया। उन महासागरों में किसी महासागर का जल मीठा है तो किसी का खारा भी। मीठे जल से सभी प्राणी खुश होते है।

अब दुबारा सृष्टि नहीं बनेगी, दुबारा जल नहीं बनेगा। जो जल है, उसी का संरक्षण करो ,तुम सुरक्षित रहोगे।

॥ जल संरक्षित, प्राणी सुरक्षित ॥

जल की कद्र करो ,जल में परमेश्वर है , जल में प्राण है। बिना जल के तुम जीवित नहीं रह सकते। यह पैसे से भी अधिक मूल्यवान है क्योंकि तुम इसे पैसे से खरीदते हो। इसे फालतू न बहाओ। परमेश्वर समझकर इसे अपने पास संचित करे ,अपने घर से दूर न करे ,अपने पास से दूर न करे अन्यथा जल के बिना एक मछली तड़पकर मर सकती है,तो मनुष्य एवं अन्य प्राणियों की बात ही क्या है ?

जल एक तत्त्व है। मनुष्य प्राणी भी जल से बना है। जल का सम्मान करे। परमेश्वर का सम्मान करे तो गरीबी पास नहीं आयेगी। जल को पैसे की तरह या पैसे को जल की तरह न बनाये।

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

॥ अग्नि तत्त्व ॥

आत्मा को अग्नि जला नहीं सकती। शरीर के अंदर अग्नि क्रोध के रूप में मौजूद है। अग्निरूपी क्रोध स्वंय का ही नाश करती है, स्वंय को जलाती है ओर अंत में सिर्फ राख ही बचता है। यह शरीर अग्नि तत्त्व से बना है और अंत समय अग्नि में ही समाहित हो जाता है, जो कुछ बचता है ,वह है – 'आत्मा'।

॥ अग्नि तत्त्व में लीन प्रभु शिव – शंकर ॥

हजरत मूसा को परमेश्वर 'अग्नि स्तम्भ' के रूप में दिखाई दिये। भगवान विष्णु और ब्रह्मा जब एक – दूसरे से विवाद कर रहे थे तब भी परमेश्वर 'अग्नि स्तम्भ' के रूप में प्रकट होकर दोनों का विवाद शान्त कराये। कहने का तात्पर्य यह है कि परमेश्वर अग्नि के रूप में है और मनुष्य प्राणी भी अग्नि से बना है।

मनुष्य प्राणी को चाहिए कि वह अपने अंदर की अग्नि को प्रकाशित करे। दूसरों को अंधकार से निकाले। सूर्य भी परमेश्वर के रूप में है ,अग्नि का एक गोला है, लेकिन उस अग्नि से समस्त ब्रह्मांड को प्रकाश मिलता है , जीवन मिलता है, अंधकार दूर होता है। ठीक इसी प्रकार हमें भी किसी भी प्राणी के अंधकार को दूर करना चाहिए , उसे प्रकाशित करना चाहिए, एक नया जीवन , नई ऊर्जा मनुष्य के भीतर प्रवाहित करना चाहिए।

अग्नि ऊपर की ओर प्रज्जवलित होती है और क्रोध भी ऊपर की ओर चढ़ता है। जिस प्रकार शिव जी क्रोध को अपनी तीसरी आँख में नियंत्रित करते है ,उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने क्रोध को तीसरी आँख के स्थान पर नियंत्रित करना चाहिए, शान्त करना चाहिए। यह नहीं कि क्रोध सिर पर पहुँच जाये और सब कुछ तहस – नहस कर दे।

अग्नि तेज है। तेज आँखों में होता है। अपने को तेजस्वी बनाये तो समस्त ब्रह्मांड आपके समक्ष शीश झुकाकर वंदना करेंगे। शरीर को पालने – पोषने में समय नष्ट न करे। अग्नि तत्त्व से आत्मा को प्रकाशित कर पवित्र करे और परमेश्वर के यहाँ अपना स्थान मृत्यु से पहले ही सुरक्षित करे।

II SHIVBHAKTT MAHAPURAN II

॥ निःस्वार्थ भाव ॥

नि :स्वार्थ का अर्थ है - अपना फायदा नहीं। निः स्वार्थ भाव से किया गया कर्म उस चक्र में प्रवेश करता है, जहाँ मनुष्य का पुर्नजन्म नहीं होता। सबसे बड़ा अर्थ तो परमेश्वर है। नदियाँ ,पेड़-पौधे, साधु-सन्त इनका जीवन तो दूसरों के लिए है। ये निःस्वार्थ भाव से अपना कर्म करते रहते है। निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म पूजनीय है।

परमेश्वर निः स्वार्थी है। वह सभी लोगों के कल्याण के लिए कर्म करते रहते है। सोचो, अगर नदियाँ स्वार्थी हो जाय, परमेश्वर स्वार्थी हो जाय तो क्या किसी प्राणी का अस्तित्व धरती पर रहेगा। माँ अपने पुत्र से, गुरू अपने शिष्य से निःस्वार्थ प्रेम करते रहते है।

आजकल तो अधिकतम जगह स्वार्थ साधन का ही सिद्धांत चलता है। मनुष्य अपना पेट पालने में लगा है। अरे भाई ! जिस परमेश्वर ने मनुष्य बनाया, मनुष्य के पेट को बनाया। उस परमेश्वर को मनुष्य से ज्यादा चिंता है। फिर भी मनुष्य दूसरे जीव को मार कर खा रहे है और अपने जीभ को संतुष्ट कर रहे है। यही कर्म एक स्वार्थी की पहचान है।

अगर जीना है, तो औरों के लिए जीओ, औरतो के लिए नहीं। स्वार्थ छोड़ो, निःस्वार्थी बनो। निःस्वार्थ में ही कल्याण है। आजकल भक्त मंदिर जाते है, प्रार्थना करते है, मुझे पुत्र हो जाय, मेरी शादी हो जाय, मैं परीक्षा में पास हो जाऊँ, मेरा दुश्मन मर जाय तो मैं आपको सवा किलो लड्डू चढ़ाऊँगा। अरे भाई ! क्या आप मजदूर है जो मजदूरी करके अपना वेतन मांग रहे है ?

जब आप थोड़ी पूजा करके उसका फल मांग लेते है तो आप अपने रास्ते, और भगवान भी फल देकर अपने रास्ते।

निःस्वार्थ भाव से किया गया कर्म परमेश्वर के हृदय को छू लेता है, उसमें जगह बना लेता है। परमेश्वर की एक आँख उस निःस्वार्थ भाव से किये गये व्यक्ति पर सदैव रहती है। वह उस व्यक्ति के रक्षक बनकर आत्मारूप होकर बातें करने लगते है। निर्देष देने लगते है। रास्ता दिखाने लगते है। सभी कष्टों से सदा-सदा के लिए मुक्त कर देते है। अपने अनन्य भक्त को ''मोक्ष'' प्रदान करते है।

॥ प्रभु को धन्यवाद देती तिब्बत देश की माता ॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

॥ धरती पर ब्रह्मास्त्र-स्त्री ॥

संसार में बहुत पास रहना मनुष्यों के अनादर का कारण हुआ करता है। कहीं किसी के साथ अत्यन्त स्नेह नहीं करनी चाहिए, अन्यथा उसकी बुद्धि अपनी स्वतंत्रता खोकर दीन हो जायेगी। पुरूष जब स्त्री को देखता है तो उसके हाव -भाव पर लट्टू हो जाता है और नरक में गिरकर अपना सत्यानाश कर लेता है। स्त्री वह माया है, जिससे जीव भगवान या मोक्ष की प्राप्ति से वंचित रह जाता है। एक ही कमल के गंध में आसक्त हुआ भ्रमर रात्रि के समय उसमें बंद हो जाने से नष्ट हो जाता है। आदमी को कभी पैर से भी काठ की बनी हुई स्त्री का भी स्पर्श नहीं करना चाहिए।

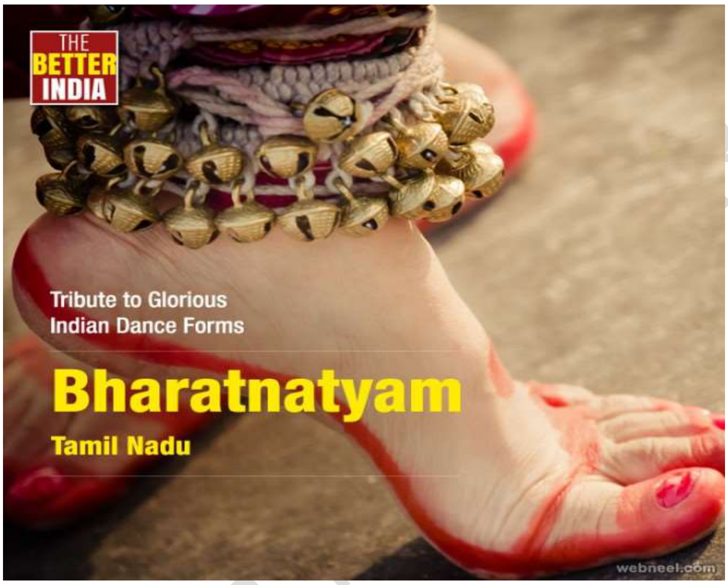

॥ सुन्दर स्त्री के पैर ॥

हाथी पकड़ने वाले तिनकों से ढके हुए गड्ढों पर कागज की हथिनी खड़ी कर देते है। उसे देखकर हाथी वहाँ आता है और गड्ढे में गिरकर फँस जाता है। स्त्री ने जिसका चित्त चुरा लिया, उसकी विद्या व्यर्थ है। अधिकतम लोग अपनी कामवासना को तृप्त करने के लिए ही किसी से प्रेम करते है। मनुष्य को किसी और का संग करने से ऐसा मोह और बंधन नहीं होता, जैसा स्त्री और स्त्री के संगियों का संग करने से होता है।

जगत में बहुत से कुसंग है, परन्तु स्त्री का संग उनमें सबसे बढ़कर है। मनुष्य सारे बंधन से छुटकारा पा सकता है, परन्तु स्त्री रूपी बंधन से वह मुक्त नहीं हो पाता। लोहे और काठ की बेड़ियों से दृढ़तापूर्वक बँधा हुआ पुरूष भी एक दिन उस कैद से छुटकारा पा सकता है,परन्तु स्त्री के बंधन से बंधा हुआ पुरूष कभी छूट नहीं पाता। शास्त्रों ने स्त्रीसंगी कामियों के संग को नरक का द्वार बताया है। स्त्रियों का हृदय और भेड़ियों का हृदय बिल्कुल एक जैसा होता है।

जब कोई व्यक्ति लुक-छुपकर परस्त्री को उड़ाना चाहता है, तब उसके स्वामी के हाथ से मारा जाकर ऐसे नरक में जा गिरता है जिसका ओर-छोर नहीं है। स्त्रियों ने पुरूषों की मति अपनी ओर आकर्षित कर ली है। स्त्रियों के चरित्र को कौन जानता है। इनका मुँह तो ऐसा होता है जैसे शरद ऋतु का खिला हुआ कमल।

बातें सुनने में ऐसी मीठी होती है, मानो अमृत घोल रखा हो, परन्तु हृदय, वह तो इतना तीखा होता है कि मानो छुरे की पैनी धार हो। लोग स्त्री के लिए अपने प्राण तक दे डालते है, यहाँ तक कि अपने माँ -बाप, गुरु और दोस्त को भी मार डालते है। स्त्री से किया गया मोह ही मनुष्य को नचा रहा है। स्त्री सम्पूर्ण व्याधियों की रानी है। हृदय को घायल करने वाला ब्रह्मास्त्र स्त्री है।

भगवान राम अपनी प्राणप्रिया सीता जी से बिछुड़कर अपने भाई लक्ष्मण के साथ वन-वन में दीन की भाँति घूमने लगे और इस प्रकार उन्होंने शिक्षा दी कि ''जो स्त्रियों में आसक्ति रखते है, उनकी यही गति होती है।''

जब आदम को परमेश्वर ने भला-बुरा का फल खाने से मना किया था। तब आदम ने तो परमेश्वर की बात मानी लेकिन स्त्री ने आदम की मति भ्रष्ट करके फल को खिलाया, जहाँ से जीवन-मृत्यु का परमेश्वर के द्वारा दिया गया आदम को दण्ड, आदमी आज तक भोग रहा है, अर्थात स्त्री आदमी के पुर्नजन्म का कारण है।

मनुष्य से लेकर भगवान भी इस ब्रह्मास्त्र रूपी स्त्री से बच नहीं सकते। ब्रह्मास्त्र हृदय को घायल करता है। यदि मनुष्य ''ओउम्''का जप करता हुआ परमेश्वर को याद करता रहता है, तो कोई भी अस्त्र परमेश्वर के आगे टिक नहीं सकता। ''ओउम्'' अस्त्र सभी ब्रह्मास्त्र की काट है।

॥ मन ही मनु है ॥

मन को ध्यान से केन्द्रित करना चाहिए। जब स्थिर करते समय मन चंचल होकर इधर-उधर भटकने लगे तब झटपट बड़ी सावधानी से उसे मनाकर, समझा-बुझाकर, फुसलाकर अपने मन को वश में कर ले। मन को एक क्षण के लिए स्वतंत्र न छोड़े। मन की एक- एक चाल, एक-एक हरकत को देखता रहे और बुद्धि के द्वारा धीरे -धीरे मन को वश में कर लेना चाहिए। घोड़ा मन, घुड़सवार बुद्धि है।

॥ साथ - साथ नमाज अदा करते दो नमाजी ॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

मन कर्मों के अधीन है। सभी इन्द्रियाँ मन के वश में है। मन किसी भी इन्द्रिय के वश में नहीं है। मन को परमेश्वर के ध्यान से केन्द्रित करना चाहिए। मन सब विकारों का उत्पत्ति स्थान है। मन को तीव्र भक्तियोग के द्वारा अपने वश में करना चाहिए।

इस संसार में अपने वश में न रहने वाले कुमार्गगामी मन के अतिरिक्त और कोई शत्रु नहीं है। मन बड़ा चंचल है। मन का प्रसार ही जगत है। मन और तूफानी हवा को रोकना बराबर है।

जैसे पैरों में जूता पहनकर चलने वालों को कंकड और कॉंटों से कोई डर नहीं होता, वैसे ही जिसके मन में संतोष हैं, उसके लिए सर्वदा और सब कहीं सुख-ही-सुख है, दुःख है ही नहीं। मन सब कुछ चाहता, है केवल परमेश्वर को याद करना नहीं चाहता। परमेश्वर को याद करने वाला मन ही मनु है। जो मन को वश में करना चाहते है, उनके लिए गुरू की अनिवार्य आवश्यकता है।

इस जीव के बन्धन और मोक्ष का कारण मन ही माना गया है। विषयों से आसक्त होने पर वह बंधन का हेतु होता है। और परमात्मा में अनुरक्त होने पर वही मोक्ष का कारण बन जाता है। मन जहाँ - जहाँ जाता है, भगवान वहाँ-वहाँ पहले से ही मौजूद रहते है।

॥ राजनीति ॥

राजनीति का अर्थ दण्डनीति है। राजनीति एक ऐसा कार्य है कि जो उसके दाव-पेंच और प्रबन्ध आदि में भीतर प्रवेश कर जाता है,वह अपने आत्मस्वरूप को नहीं समझ सकता। पृथ्वी में यह बात प्रायः देखी जाती है कि अपने प्राणों का ही पोषण करने वाले लोभी राजा अपने स्वार्थ के लिए माता-पिता, भाई-बन्धु और अपने अत्यन्त हितैषी इष्ट-मित्रों की भी हत्या कर डालते है। आजकल कोटि-कोटि असुर सेनापतियों ने राजा का नाम धारण कर रखा है। राजा के शुभागमन से डाकू,चोरों के सिवा और सब लोग निर्भय हो जाते है। राजा सारी प्रजा का प्रतीक है।

जो प्रजा मन, वचन और कर्म से राजा का प्रिय कार्य करती है, उसका भला होता है और जो राजा के विपरित काम करती है, उसे हानि उठानी पड़ती है। जब प्रजा देखती है कि यह राजा हमारी रक्षा नहीं कर सकता, तब वह उसका साथ छोड़ देती है। प्रजा को अपने ऊपर किसी परदेशी को राजा नहीं बनानी चाहिए।

जो मूर्ख राजा अपनी राजलक्ष्मी के घमंड से अंधे-होकर ब्राह्मणों का धन हड़पना चाहते है,समझना चाहिए - कि वे जान- बूझकर नरक में जाने का रास्ता साफ कर रहे है। जीवन -यापन के तुच्छ लाभ के लिए अनीति अपनाता है तो वह राजा आततायी है। इस सारी प्रजा को यदि क्रिया-पथ पर नहीं चलाता तो उस सारी प्रजा का हनन करने वाला हत्यारा है, हिंसक है और क्रमशः चलते हुए चला लेता है वह शुद्ध अहिंसक है। प्रत्येक राजा और शासक ईश्वर द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि - मात्र है। राजा का कर्त्तव्य है कि वह ईश्वर के नाम पर शासन करे , ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करे और अपनी प्रजा से भी उसका पालन कराये।

यदि प्रजा और प्रजा पर शासन करने वाला राजा, दोनों प्रभु,अपने ईश्वर के अनुगामी बने रहते है तो सबका कल्याण होता है। परन्तु यदि प्रभु की अवज्ञा और उसकी आज्ञाओं का विरोध होगा, तो प्रभु का हाथ प्रजा सहित राजा को दण्ड देता है।

|| SHIVBHAKT MAHAPURAN ||

॥ परमेश्वर की क्रोधरूपी आँखें ॥

जो राजा मनुष्यों का न्यायपूवर्क शासन करता है,जो ईश्वर पर श्रद्धा रखते हुए शासन करता है, वह सूर्योदय के समय, मेघविहित प्रभात में , प्रातः कालीन प्रकाश- जैसा है।

प्रजा को राजनीति नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह मोक्ष से दूरी बनाती है। राजनीति से सिर्फ नेता का पेट भरता है, जनता का नहीं। प्रजा को सिर्फ राजा को चुनने के लिए ही एक दिन राजनीति करनी चाहिए। आज राजनीति में स्वार्थ भाव और वैर भाव निहित है। जब धर्म में राजनीति आ जाता है। तो अधर्म होता है।

जो राजा हिंसापरायण, दुःशील और अजितेन्द्रिय होता है, उसे राजा मानकर सेवा करने वाली प्रजा दरिद्र होकर दुःख पर दुःख भोगती रहती है और उसके सामने संकट पर संकट आते रहते है।

हिंसाविहारं नृपतिं दुःशीलमजितेन्द्रियम।

प्रजा भजन्त्यः सीदन्ति दरिद्रा नित्यदुखिताः॥

राजा को किसी का बुरा नहीं सोचना चाहिए। राजा को कभी किसी से डाह नहीं करना चाहिए। राजा किसी के गुणों में दोष न निकाले और ब्यर्थ की बात न करे। प्रजा का कर्तव्य है कि वह प्रजापालक राजा से कोई पाप बन जाये तो भी उसका तिरस्कार न करे, क्योंकि वह अपने प्रभाव से आठ लोकपालों के तेज को धारण करता है।

जैसे दोनों ओर जलती हुई लकड़ी के बीच में रहने वाले चींटी आदि जीव महान संकट में पड़ जाते है, वैसे ही इस समय सारी प्रजा एक ओर राजा के और दूसरी ओर चोर-डाकुओं के अत्याचार से महान संकट में पड़ रही है।

जो राजा दुष्ट मंत्री और चोर से अपनी प्रजा की रक्षा करते हुए न्यायानुकूल कर लेता है, वह इस लोक इस लोक में और परलोक में दोनों जगह सुख पाता है। राजा का कल्याण प्रजापालन में ही है। इससे उसे परलोक में प्रजा के पुण्य का छठा भाग मिलता हैं इसके विपरीत जो राजा प्रजा की रक्षा तो नहीं करता,

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II

किन्तु उससे कर वसूल करता जाता है, उसका सारा पुण्य तो प्रजा छीन लेती है और बदले में उसे प्रजा के पाप का भागी होना पड़ता है।

जो राजा प्रजा को धर्ममार्ग की शिक्षा न देकर केवल उससे कर वसूल करने में लगा रहता है, वह केवल प्रजा के पाप का ही भागी होता है और अपने ऐश्वर्य से हाथ धो बैठता है।

राजा तो प्रजा का शासन और पालन करने के लिए नियुक्त किया हुआ उसका दास ही है। जैसे माँ-बाप, बालकों की, पलकें नेत्रों की,पति पत्नी की, गृहस्थ, भिक्षुकों की और ज्ञानी अज्ञानियों की रक्षा करते है और उनका हित चाहते है - वैसे ही प्रजा की रक्षा और हित का उत्तरदायी राजा होता है।

गुरू, मंत्री, राष्ट्र, दुर्ग, कोष, सेना, मित्र यदि कुशल है तो राजा भी कुशल है। राजा यदि अपने राज्य तथा सर्वलोकाधिपत्य को स्थिर रखना चाहता हो तो उसे अपने राज्य में एवं अन्यत्र भी पापियों का वध करना चाहिए।

॥ शिव महिमा ॥

जो लोग सदा प्रेमपूर्वक शक्ति के स्वामी भगवान शंकर का भजन करते है, उन्हें भगवान शम्भु प्रभुशक्ति, उत्साहशक्ति और मंत्रशक्ति- ये तीनों अक्षय शक्तियाँ प्रदान करते है। यदि शंकर की सेवा न करे तो मनुष्य सात जन्मों तक दरिद्र होता है और उन्हीं की सेवा से सेवक को लोक में कभी नष्ट न होने वाली लक्ष्मी प्राप्त होती है। जो भगवान शिव की सेवा करता है, उसकी सेवा भगवान शिव भी करते है।

॥ शिवभक्ति ॥

शिव की महिमा से भूख-प्यास, शोक-मोह और जन्म-मृत्यु ये छहों शिवभक्तों के वश में रहते है। शिवभक्त कृपा की मूर्ति होता है, वह किसी भी प्राणी से वैरभाव नहीं रखता और घोर से घोर दुःख भी प्रसन्नतापूर्वक सहता है। उसके जीवन का सार है - सत्य। उसके मन में किसी प्रकार की पापवासना कभी नहीं आती। वह समदर्शी और उसका भला करने वाला होता है।

॥ समस्त मंत्रों का राजा - ओउम् ॥

II SHIVBHAKT MAHAPURAN II

अ उ म . ँ - ओउम्

अ - शिव

उ - शिवा

म - शिव - शिवा का मिलन।

ओउम् में बिन्दु शक्ति है और नाद शिव। माता देवी बिन्दुरूपा नादरूपः शिवः पिता॥

॥ ओउम्रूपी शिव॥

बिन्दुरूपा देवी उमा माता है और नादस्वरूप भगवान शिव पिता।

ओउम् अपने उपासकों को बलपूर्वक मोक्ष तक पहुँचाता है। 9 करोड़ 'ओउम्' के जप से मनुष्य शुद्ध हो जाता है। 18 करोड़ 'ओउम्' के जप से मनुष्य पृथ्वी तत्त्व पर विजय पाता है। 27 करोड़ 'ओउम्' के जप से मनुष्य जल -तत्त्व को जीत लेता है। 36 करोड़ 'ओउम्' के जप से मनुष्य अग्नि तत्त्व पर विजय पाता है। 45 करोड़ 'ओउम्' जप से मनुष्य वायु तत्त्व पर विजयी होता है। 54 करोड़ 'ओउम्' के जप से मनुष्य आकाश को अपने अधिकार में कर लेता है। 63 करोड़ 'ओउम्' जप से मनुष्य अंहकार को भी जीत लेता है। 'ओउम्' से ही 5 मंत्र उत्पन्न हुए है।

1. 'ओउम्' तत्त्वमसि
2. 'ओउम्' भूर्भुवः(गायत्री मंत्र)
3. 'ओउम्' त्रयम्बकं (मृत्युंजय मंत्र)
4. 'ओउम्' नमः शिवाय
5. चिन्तामणि मंत्र।

॥ ओउम् नमः शिवाय॥

II SHIVBHAKTI MAHAPURAN II